

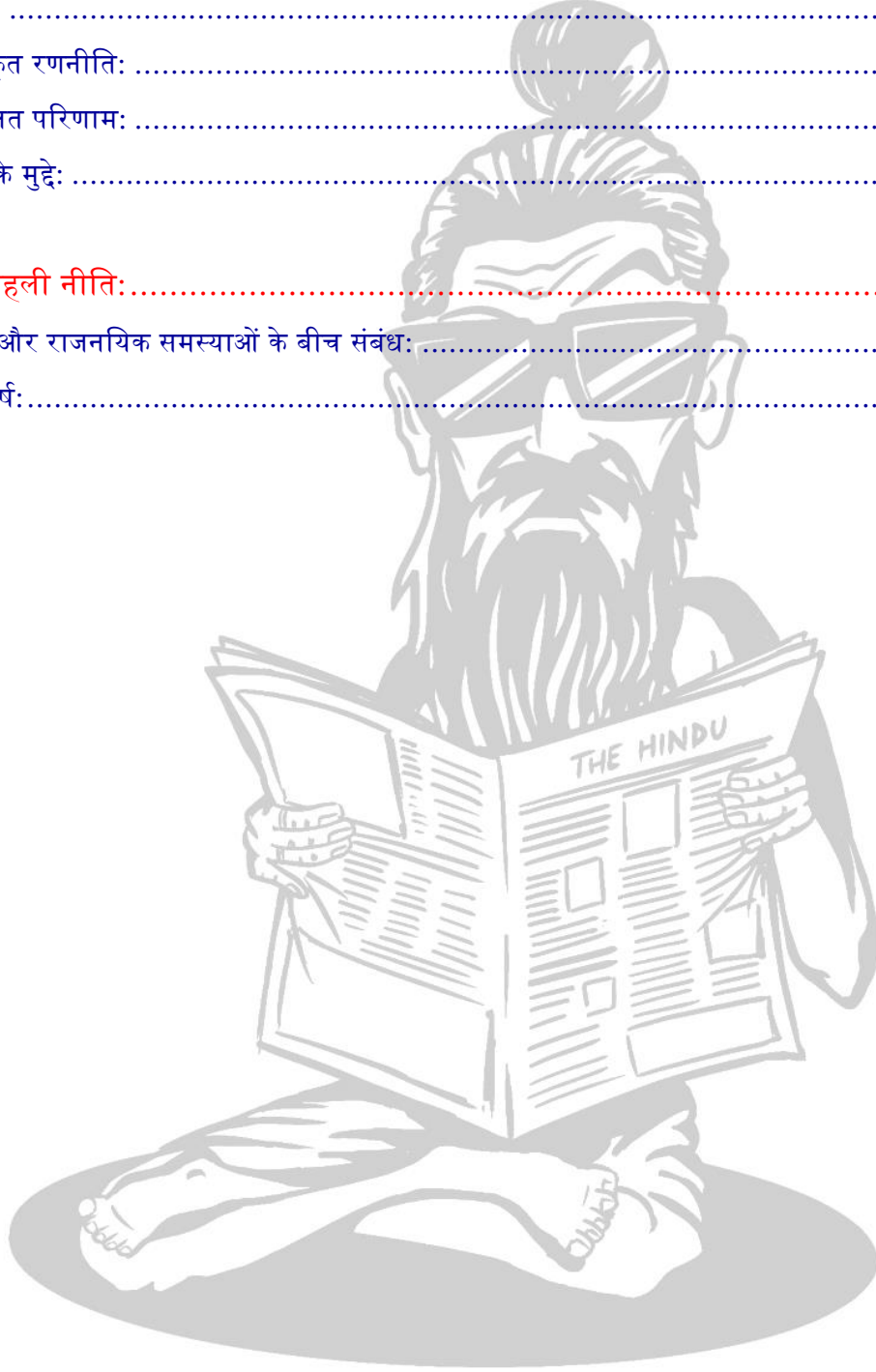
INDEX

DAILY CURRENT AFFAIRS NOTES

2nd August 2022

1. - गिग अर्थव्यवस्था:.....	3
(i) "गिग इकॉनमी" क्या है?	3
(ii) भारत की गिग इकॉनमी में क्या संभावनाएं हैं?	3
(iii) कौन से प्राथमिक चालक गिग अर्थव्यवस्था को प्रेरित करते हैं?	3
(iv) गिग अर्थव्यवस्था को कौन से मुद्दे प्रभावित कर रहे हैं?	4
(v) महामारी और गिग अर्थव्यवस्था:	4
(vi) गिग जॉब्स महिलाओं को क्या लाभ और हानियाँ प्रदान करता है?	5
(vii) श्रमिक सुरक्षा संहिता से संबंधित समस्याएं:	6
(viii) GIG कर्मचारी की किन स्थितियों में सुधार की आवश्यकता है?	6
2. - अफ्रीकन स्वाइन फीवर:	8
3. - मौद्रिक नीति समिति:.....	8
(i) कार्य:	8
(ii) एमपीसी की संरचना:	8
(iii) सदस्यों का चयन और शर्तें:	9
(iv) निर्णय कैसे प्राप्त होते हैं?	9
(v) आरबीआई की मौद्रिक नीति में क्या शामिल है?	9
(vi) मौद्रिक नीति के क्या लक्ष्य हैं?	9
(vii) मौद्रिक नीति उपकरणों का प्रबंधन कैसे किया जाता है?	9
4. - जीएसटी परिषद:	10
(i) जीएसटी परिषद: यह क्या है?	10
(ii) सदस्य:	10
(iii) कार्य:	10

संपादकीय विश्लेषण.....	11
1. प्रधानमंत्री गति शक्ति योजना:.....	11
(i) लक्ष्य:	11
(ii) एकीकृत रणनीति:	11
(iii) अपेक्षित परिणाम:	11
(iv) आगे के मुद्दे:	12
2. पड़ोस की पहली नीति:.....	13
(i) क्षेत्रों और राजनयिक समस्याओं के बीच संबंध:.....	13
(ii) निष्कर्ष:.....	14



1. - गिग अर्थव्यवस्था:

GS III

विषय→भारतीय अर्थव्यवस्था

"गिग इकॉनमी" क्या है?

- गिग इकॉनमी एक प्रकार का मुक्त बाजार है जहां उद्यम अक्सर अस्थायी भूमिकाओं और अस्थायी आधार पर स्वतंत्र श्रमिकों का उपयोग करते हैं।
- बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में सॉफ्टवेयर, साझा सेवाओं और पेशेवर सेवाओं जैसे उद्योगों में काम करने वाले 1.5 करोड़ गिग कर्मचारी हैं।
- इंडिया स्टार्टिंग फेडरेशन द्वारा 2019 में किए गए अध्ययन के अनुसार, भारत अमेरिका, चीन, ब्राजील और जापान के बाद दुनिया का पांचवां सबसे बड़ा फ्लेक्स-स्टार्टिंग बाजार है।

भारत की गिग इकॉनमी में क्या संभावनाएं हैं?

- देश की 56 प्रतिशत नई नौकरियां, जिसमें सफेदपोश और नीलेपोश कर्मचारी दोनों शामिल हैं, गिग इकॉनमी में व्यवसायों द्वारा सृजित किए गए थे।
- भारत में ब्लू-कॉलर नौकरियों में अक्सर गिग वर्क्स की आवश्यकता होती है, लेकिन उन उद्योगों में भी उनकी मांग बढ़ रही है, जिन्हें परियोजना-विशिष्ट परामर्श, बिक्री, वेब डिज़ाइन, सामग्री लेखन और सॉफ्टवेयर विकास की आवश्यकता होती है।
- गिग इकॉनमी में "दीर्घावधि" में भारत के सकल घरेलू उत्पाद को 1.25 प्रतिशत तक बढ़ाने और गैर-कृषि

व्यवसायों में 90 मिलियन नौकरियों तक का समर्थन करने की क्षमता है।

- आय और बेरोजगारी के अंतर को बंद करने के लिए जैसे-जैसे भारत 2025 तक 5 ट्रिलियन डॉलर जीडीपी होने के अपने घोषित लक्ष्य के करीब पहुंच रहा है, गिग इकॉनमी एक महत्वपूर्ण कारक होगा।

कौन से प्राथमिक चालक गिग अर्थव्यवस्था को प्रेरित करते हैं?

- दूर से काम करने का विकल्प: डिजिटल युग में, कर्मचारियों को अब एक विशिष्ट क्षेत्र से काम करने के लिए मजबूर नहीं किया जाता है; इसके बजाय, वे किसी भी स्थान से अपना काम पूरा कर सकते हैं। यह संगठनों को स्थान की परवाह किए बिना सर्वश्रेष्ठ लोगों का चयन करने में सक्षम बनाता है।
- सहस्राब्दी की उम्र पिछली पीढ़ियों की तुलना में करियर को काफी अलग तरीके से देखती है। वे करियर के बजाय उस काम को आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं जो उनके गहरे हितों को पूरा नहीं कर सकता है।
- गिग श्रमिकों के लिए, विभिन्न भुगतान विधियों को नियोजित किया जाता है, जिसमें निश्चित शुल्क (अनुबंध शुरू होने पर निर्णय लिया गया), समय और प्रयास, श्रम की वास्तविक इकाई, और उत्पादन की गुणवत्ता शामिल है। सबसे लोकप्रिय रणनीति के रूप में समय और प्रयास मॉडल फिक्स्ड-फीस मॉडल के करीब दूसरा है।
- स्टार्ट-अप संस्कृति के उदय के साथ-साथ भारतीय स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र का तेजी से विस्तार हुआ है।

- संविदात्मक फ्रीलांसरों का उपयोग गैर-मुख्य कार्य के लिए किया जाता है क्योंकि पूर्णकालिक कर्मचारियों को काम पर रखने से स्टार्ट-अप संगठनों के लिए महत्वपूर्ण निश्चित लागत होती है।
- स्टार्ट-अप अपने तकनीकी प्लेटफॉर्म को बढ़ावा देने के लिए इंजीनियरिंग, उत्पाद, डेटा विज्ञान और मशीन लर्निंग सहित विषयों में योग्य प्रौद्योगिकी फ्रीलांसरों (परियोजना-दर-परियोजना के आधार पर) को काम पर रखने के बारे में भी सोच रहे हैं।
- ठेका श्रमिकों की बढ़ती आवश्यकता: महामारी के जवाब में, बहुराष्ट्रीय कंपनियां परिचालन व्यय को कम करने के लिए विशेष रूप से विशेष परियोजनाओं के लिए लचीली रोजगार प्रथाओं को नियोजित कर रही हैं।
- इस प्रवृत्ति का भारत में गिग संस्कृति पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।

गिग अर्थव्यवस्था को कौन से मुद्दे प्रभावित कर रहे हैं?

- गिग इकॉनमी में कर्मचारियों की नौकरी की सुरक्षा कम होती है और लाभ कम होता है क्योंकि गिग इकॉनमी मुख्य रूप से अनियंत्रित वातावरण में बढ़ती है।
- फिर भी, कुछ लोग दावा करते हैं कि भारत की गिग अर्थव्यवस्था देश के लंबे समय से चले आ रहे, अनियंत्रित अनौपचारिक श्रम बाजार की निरंतरता है, जो श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा, बीमा आदि प्रदान नहीं करता है।
- आवश्यक योग्यताएँ: एक कार्यकर्ता के पास आवश्यक कौशल होना चाहिए। बातचीत करने की क्षमता हमेशा सीमित रहेगी जब तक कि कोई व्यक्ति विशेष रूप से उपहार में न हो।

- हालांकि निगमों के लिए कर्मचारी प्रशिक्षण में निवेश करना आम बात है, एक गिग इकॉनमी कार्यकर्ता को इसे अपने दम पर और अपने दम पर करना होगा।
- मांग और आपूर्ति के बीच असंतुलन के कारण, जो पहले से ही ऑनलाइन फ्रीलांसरों के लिए उपलब्ध रोजगार की बात आती है, परिणामस्वरूप वेतन अंततः कम हो जाएगा।

महामारी और गिग अर्थव्यवस्था:

- व्यवसाय कोविड -19 से प्रभावित हुए, और लोगों को आय के विश्वसनीय स्रोत खोजने पड़े। प्रकोप के परिणामस्वरूप गिग लेबर की आवश्यकता बढ़ गई।
- उदाहरण के लिए, Google ने नौकरी चाहने वालों को खुदरा, अतिथि और ऑन-डिमांड व्यवसायों सहित उद्योगों में उद्घाटन के साथ जोड़ने के लिए भारत में अपने Kormo Jobs ऐप के अगस्त 2020 लॉन्च की घोषणा की।
- जैसा कि समय के साथ गिग वर्कर्स की संख्या बढ़ी है, विशेष रूप से उपभोक्ता इंटरनेट कंपनियों जैसे ज़ोमैटो, स्विगी, उबर, ओला, अर्बन क्लैप, आदि के साथ, कर्मचारियों ने अपने वेतन में गिरावट की शिकायत की है।
- ठेका श्रमिकों के पर्यावरण पर इसके दो मुख्य निहितार्थ इस प्रकार हैं:
- ऑन-डिमांड स्टाफिंग की बढ़ती आवश्यकता को पूरा करने के लिए, इसने नए बिजनेस मॉडल तैयार किए हैं।
- दूसरा, इसने एक बार फिर उन रोजगार नियमों के बारे में जागरूकता बढ़ाई है जो गिग श्रमिकों की सुरक्षा करते हैं और एक संघीय न्यूनतम वेतन निर्धारित करते हैं।

गिग जॉब्स महिलाओं को क्या लाभ और हानियाँ प्रदान करता है?

पेशेवरों:

- श्रम और घर को संतुलित करने के लिए समर्थन: गिग वर्क का लचीलापन महिलाओं को रोजगार के साथ देखभाल करने वालों और गृहिणियों के रूप में अपनी पारंपरिक भूमिकाओं को संतुलित करने की अनुमति देता है।
- महिलाओं के लिए एक सुरक्षित कार्य वातावरण प्रदान करें: प्रौद्योगिकी और गिग रोजगार, जो वर्क फ्रॉम होम द्वारा समर्थित है, ने यात्रा और रात की पाली (डब्ल्यूएफएच) के दौरान सुरक्षा के मुद्दे को संबोधित किया है।
- महिलाओं के पास अब टियर 2 और टियर 3 शहरों में भी रोजगार के अधिक विकल्प हैं।
- ऑन-डिमांड वर्क उपलब्ध है: महिलाओं के पास अब ऑन-डिमांड रोजगार तक पहुंच है, जिससे उन्हें फिट होने पर कार्यबल में प्रवेश करने और बाहर निकलने की स्वतंत्रता मिलती है।
- अतिरिक्त आय में सहायता: गिग रोजगार महिलाओं को अधिक आय अर्जित करने में सक्षम बनाता है, उनके आत्म-सम्मान का निर्माण करता है, और उन्हें विकल्प चुनने के लिए सशक्त बनाता है-ये सभी महिला सशक्तिकरण के आवश्यक घटक हैं।

दोष:

- चूंकि गिग इकॉनमी जेंडर वेज गैप, पक्षपाती एल्गोरिदम, जेंडर रूढ़िवादिता और श्रम बाजार में पहले से मौजूद प्रौद्योगिकी विभाजन के साथ समस्याओं

को बढ़ा देती है, यह महिलाओं के प्रवेश के लिए महत्वपूर्ण बाधाएं पैदा करती है।

- नतीजतन, डिजिटल दुनिया में इन अंतर्निहित संरचनात्मक मुद्दों को खोजना और उनका समाधान करना आवश्यक है।
- कंप्यूटर साक्षरता में लिंग अंतर गिग रोजगार में महिलाओं की भागीदारी को गंभीर रूप से बाधित करता है। GSMA मोबाइल जेंडर गैप रिपोर्ट 2020 के अनुसार, भारत में केवल 21% महिलाएं ही मोबाइल इंटरनेट का उपयोग करती हैं, जिसके परिणामस्वरूप प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था में भागीदारी के लिए आवश्यक डिजिटल तकनीकों तक असमान पहुंच होती है।
- देश में गिग वर्कर्स पर एक व्यापक डेटाबेस के अभाव के बावजूद, प्लेटफॉर्म को लैंगिक रूढ़ियों के अनुसार नौकरियों को वर्गीकृत करने के लिए पाया गया है।
- पुरुष प्रसव और परिवहन में अधिक काम करते हैं, जबकि महिलाएं अक्सर औपचारिक घरेलू और देखभाल करने वाले कार्यों को संभालने के साथ-साथ सौंदर्य और कल्याण सेवाएं भी प्रदान करती हैं।
- वेतन असमानताएँ: फ्रीलांस अर्थव्यवस्था में वेतन अंतराल एक सामान्य घटना है।
- महामारी से पहले की रिपोर्टों के अनुसार, भारत में पुरुषों और महिलाओं के गिग वर्कर्स ने 8% से 10% कम कमाई की।
- अध्ययनों के अनुसार, महिलाएं अपनी क्षमताओं को कम आंकती हैं और सीखी गई असमानता के परिणामस्वरूप कम वेतन वाली नौकरियों को स्वीकार करती हैं, जो गिग इकॉनमी में पहले से ही स्पष्ट वेतन असमानता को बढ़ा देती है।
- महिलाओं के खिलाफ पक्षपाती: मंच अक्सर महिलाओं के साथ उनके "ऑन-डिमांड" कार्य शेड्यूल और प्रोत्साहन संरचनाओं के कारण भेदभाव करते हैं।

- व्यस्त समय के लाभ, जब मांग और कमाई दोनों अधिक होती हैं, आमतौर पर घरेलू और चाइल्डकैअर जिम्मेदारियों में सक्रिय महिलाओं द्वारा चूक जाते हैं।
- इसके अलावा, भुगतान और अवैतनिक कार्यों के संयोजन के कारण महिलाओं के कार्य दिवस पुरुषों की तुलना में अधिक लंबे होते हैं, जिससे उनके समय की असुरक्षा बढ़ जाती है।
- गिग इकॉनमी के लिए लेबर कोड में क्या शामिल है?
- वर्तमान में अधिनियमित कानून:
- मजदूरी पर 2019 कोड गिग श्रमिकों सहित संगठित और असंगठित दोनों क्षेत्रों के लिए एक सार्वभौमिक न्यूनतम मजदूरी और न्यूनतम मजदूरी स्थापित करता है।
- 2020 सामाजिक सुरक्षा संहिता में, गिग श्रमिकों को एक नई व्यावसायिक श्रेणी के रूप में मान्यता दी गई है।
- इस परिभाषा के अनुसार, गिग वर्कर वह व्यक्ति होता है जो काम करता है या कार्य व्यवस्था में भाग लेता है और पारंपरिक नियोक्ता-कर्मचारी संबंधों के बाहर उनके लिए मुआवजा प्राप्त करता है।

श्रमिक सुरक्षा संहिता से संबंधित समस्याएं:

- 2020 के सामाजिक सुरक्षा कानून पर संहिता लाभ की गारंटी नहीं देती है; फिर भी, प्लेटफॉर्म वर्कर्स के पास वर्तमान में कुछ लाभ हैं, जिनमें मातृत्व लाभ, जीवन और विकलांगता बीमा, वृद्धावस्था सुरक्षा, भविष्य निधि लाभ, और नौकरी पर लगी चोटों के लिए मुआवजा शामिल हैं।
- हालांकि, पात्र होने की गारंटी नहीं है कि आप लाभ प्राप्त करेंगे।
- किसी भी प्रावधान द्वारा लाभ की गारंटी नहीं दी जाती है, इसलिए भले ही केंद्र सरकार कभी-कभी रोजगार

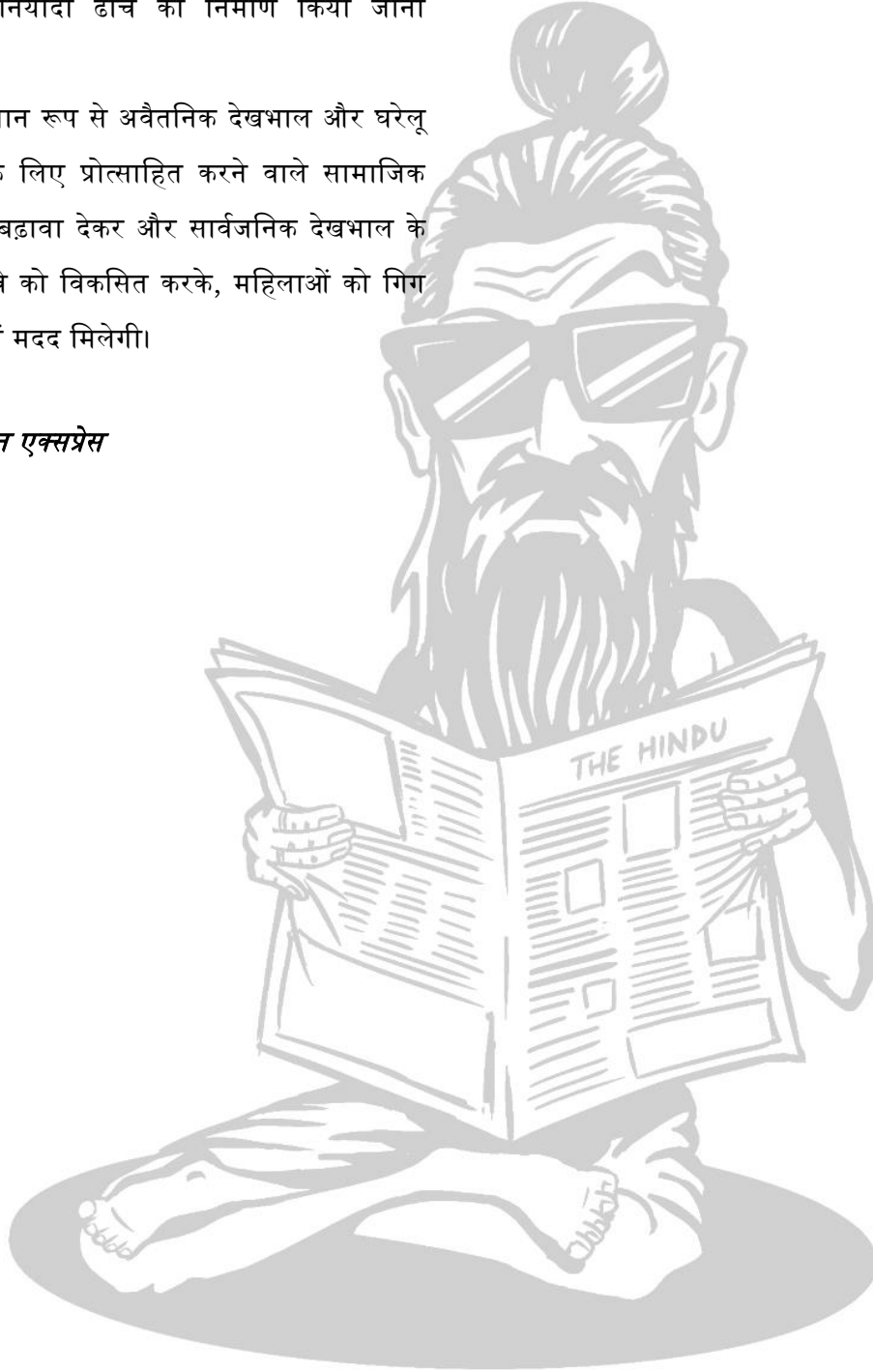
और व्यक्तिगत सुरक्षा की इन चिंताओं को दूर करने के लिए सामाजिक कार्यक्रम बनाती है, लेकिन उन्हें दिया नहीं जाता है।

- निश्चित कर्तव्यों का अभाव: केंद्र सरकार, प्लेटफॉर्म एग्रीगेटर और कर्मचारी सभी संयुक्त रूप से संहिता के अनुसार बुनियादी कल्याणकारी उपाय प्रदान करने के लिए उत्तरदायी हैं।
- हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि किस हद तक लाभ पहुंचाने की जिम्मेदारी किस हितधारक की है।

GIG कर्मचारी की किन स्थितियों में सुधार की आवश्यकता है?

- गिग वर्कर्स को सशक्त बनाने की आवश्यकता: एक अम्ब्रेला यूनियन बनाकर, गिग वर्कर्स को अधिक बातचीत की शक्ति प्रदान करना संभव होगा।
- औपचारिक मान्यता और सूचना समरूपता उन्हें प्लेटफॉर्म के खिलाफ बेहतर तरीके से बचाव करने में मदद करेगी।
- प्लेटफॉर्म वर्कर्स को अनिवार्य कवरेज की पेशकश की जानी चाहिए: हालांकि कुछ सकारात्मक बदलाव गिग वर्कर्स को श्रम कानून में शामिल करने के परिणामस्वरूप हुए हैं, उनकी सामाजिक सुरक्षा की शर्तें अस्पष्ट हैं और इनमें किसी भी स्थापित नियामक एजेंसियों की कमी है।
- इसके परिणामस्वरूप प्लेटफॉर्म कार्यकर्ताओं को सार्वजनिक रूप से समर्थित कार्यक्रमों प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के माध्यम से आवश्यक कवरेज प्राप्त करना चाहिए।
- महिला गिग वर्कर्स की सुरक्षा के लिए, जो आमतौर पर प्लेटफॉर्म इकोनॉमी में अधिक कमजोर होती हैं, एग्रीगेटर इसे संभव बना सकते हैं।

- उपयुक्त सामाजिक और भौतिक बुनियादी ढांचे का निर्माण आवश्यक है: महिलाओं को गिग वर्क में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए सही भौतिक और सामाजिक बुनियादी ढांचे का निर्माण किया जाना चाहिए।
- पुरुषों को समान रूप से अवैतनिक देखभाल और घरेलू काम करने के लिए प्रोत्साहित करने वाले सामाजिक मानदंडों को बढ़ावा देकर और सार्वजनिक देखभाल के बुनियादी ढांचे को विकसित करके, महिलाओं को गिग वर्क में जाने में मदद मिलेगी।
- स्रोत→ इंडियन एक्सप्रेस



2. - अफ्रीकन स्वाइन फीवर:

GS II

विषय→स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे

- यह घरेलू और जंगली सूअरों में रक्तस्रावी बुखार के तीव्र रूप को प्रभावित करता है और इसका कारण बनता है। यह एक अत्यधिक संक्रामक और घातक पशु रोग है।
- तेज बुखार, अवसाद, एनोरेक्सिया, भूख न लगना, त्वचा से रक्तस्राव, उल्टी और दस्त इस बीमारी के कुछ और लक्षण हैं।
- 1920 के दशक में, यह पहली बार अफ्रीका में पाया गया था।
- अतीत में, कैरिबियन, दक्षिण अमेरिका और यूरोप और अफ्रीका के क्षेत्रों में महामारी का दस्तावेजीकरण किया गया है।
- हालाँकि, 2007 के बाद से, घरेलू और जंगली सूअरों में बीमारी की रिपोर्ट एशिया, अफ्रीका और यूरोप के अन्य देशों में बनाई गई है।
- चूंकि मृत्यु दर लगभग 100% है और बुखार का कोई ज्ञात उपचार नहीं है, जानवरों को मारना ही इसे फैलने से रोकने का एकमात्र तरीका है।
- चूंकि एएसएफ मुख्य रूप से एक जानवर से दूसरे जानवर में फैलता है, इसलिए इंसानों को इससे कोई खतरा नहीं है।
- विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (OIE) स्थलीय पशु स्वास्थ्य संहिता ASF को एक ऐसी बीमारी के रूप में सूचीबद्ध करती है जिसकी सूचना OIE को दी जानी चाहिए।

• स्रोत→ हिन्दू

3. - मौद्रिक नीति समिति:

GS III

विषय→भारतीय अर्थव्यवस्था

- मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी), एक सरकार द्वारा नियुक्त निकाय जो आरबीआई की देखरेख करती है, को रेपो दर, रिवर्स रेपो दर, बैंक दर और नकद आरक्षित अनुपात (सीआरआर) जैसे उपकरणों का उपयोग करके मौद्रिक नीति तैयार करने का काम सौंपा जाता है।
- आरबीआई अधिनियम, धारा 45ZB में 1934 के संशोधनों के अनुसार, भारत की केंद्र सरकार ने इसे स्थापित किया।

कार्य:

- एमएसएफ, रेपो रेट, रिवर्स रेपो रेट और लिक्विडिटी एडजस्टमेंट सुविधा सहित विभिन्न नीतिगत दरों को चुनने का कार्य एमपीसी के दायरे में आता है।

एमपीसी की संरचना:

- कमेटी में छह लोग होंगे।
- छह में से तीन सदस्यों का प्रस्ताव सरकार करेगी।
- गवर्नर पदेन अध्यक्ष के रूप में काम करेगा, और अन्य तीन सदस्य आरबीआई से होंगे। मौद्रिक नीति के प्रभारी आरबीआई के डिप्टी गवर्नर के साथ-साथ केंद्रीय बैंक के कार्यकारी निदेशक दोनों सदस्य होंगे।

सदस्यों का चयन और शर्तें:

- **चयन:** कैबिनेट सचिव की अध्यक्षता वाली एक खोज-सह-चयन समिति एमपीसी के लिए आरबीआई गवर्नर, आर्थिक मामलों के सचिव और अर्थशास्त्र, बैंकिंग, वित्त और मौद्रिक नीति के क्षेत्र में तीन विशेषज्ञों के साथ मिलकर सरकार के नामांकन का चयन करेगी।
- एमपीसी के सदस्यों को चार साल के कार्यकाल के लिए नियुक्त किया जाता है और वे पुनर्नियुक्ति के लिए पात्र नहीं होते हैं।

निर्णय कैसे प्राप्त होते हैं?

- प्रत्येक सदस्य के पास एक मत होता है, और निर्णय बहुमत से किए जाते हैं।
- समिति के अध्यक्ष भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर होंगे। टाई होने की स्थिति में राज्यपाल के पास निर्णायक मत होगा, लेकिन पैनल के अन्य सदस्यों को ओवरराइड करने की वीटो क्षमता नहीं होगी।

आरबीआई की मौद्रिक नीति में क्या शामिल है?

- जीडीपी बढ़ाने और मुद्रास्फीति को कम करने के उद्देश्य से अपने नियंत्रण में मौद्रिक संसाधनों के उपयोग के संबंध में भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की नीति को इसकी "मौद्रिक नीति" कहा जाता है।
- भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम 1934 के द्वारा आरबीआई को मौद्रिक नीति निर्धारित करने का अधिकार दिया गया है।

मौद्रिक नीति के क्या लक्ष्य हैं?

- चक्रवर्ती समिति की सिफारिशों के अनुसार, भारत की मौद्रिक नीति को नए वित्तीय संस्थानों के विस्तार, आर्थिक विकास, इक्विटी और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने सहित कारकों को ध्यान में रखना चाहिए।
- आरबीआई एक प्रबंधनीय सीमा के भीतर मुद्रास्फीति को कम करने के लिए काम करना जारी रखता है, भले ही भारत सरकार देश की जीडीपी विकास दर को तेज करने का प्रयास करती है।
- मौद्रिक नीति समिति अपने प्रमुख लक्ष्यों को पूरा करने के लिए देश को अपने मुद्रास्फीति लक्ष्य तक पहुँचने में मदद करने के लिए सर्वोत्तम नीतिगत ब्याज दर का चयन करती है।

मौद्रिक नीति उपकरणों का प्रबंधन कैसे किया जाता है?

- मौद्रिक नीति उपकरणों की दो श्रेणियाँ हैं: गुणात्मक उपकरण और मात्रात्मक उपकरण।
- ओपन मार्केट ऑपरेशंस, बैंक रेट, रेपो रेट, रिवर्स रेपो रेट, केश रिजर्व रेशियो, सांविधिक लिक्विडिटी रेशियो, मार्जिनल स्टैंडिंग फैसिलिटी और लिक्विडिटी एडजस्टमेंट फैसिलिटी लिस्ट (LAF) में क्वांटिटेटिव इंस्ट्रूमेंट्स में से हैं।
- प्रत्यक्ष कार्रवाई, लाभ मार्जिन में समायोजन, और नैतिक अनुनय सभी गुणात्मक साधनों के उदाहरण हैं।

• **स्रोत→ इंडियन एक्सप्रेस**

4. - जीएसटी परिषद:

प्रीलिम्स विशिष्ट विषय

जीएसटी परिषद: यह क्या है?

- संवैधानिक (122वां संशोधन) विधेयक (संक्षिप्त सीएबी) को जीएसटी स्थापित करने के लिए 2016 में संसद के दोनों सदनों द्वारा अनुमोदित किया गया था।
- 15 से अधिक राज्यों ने सीएबी को मंजूरी दी, और माननीय राष्ट्रपति ने बाद में "संविधान (एक सौ पहला संशोधन) अधिनियम, 2016" पर हस्ताक्षर किए।
- तब से, जीएसटी परिषद को आधिकारिक तौर पर मान्यता दी गई है, जिससे जीएसटी से संबंधित विवादों को हल करने के लिए जिम्मेदार संवैधानिक निकाय बनाया गया है।
- संशोधित संविधान के अनुच्छेद 279A(1) के अनुसार राष्ट्रपति ने केंद्र और राज्यों के इस संयुक्त मंच की स्थापना की।

सदस्य:

- केंद्रीय वित्त मंत्री जीएसटी परिषद के अध्यक्ष हैं।
- राज्य के वित्त मंत्री इसके सदस्य हैं।

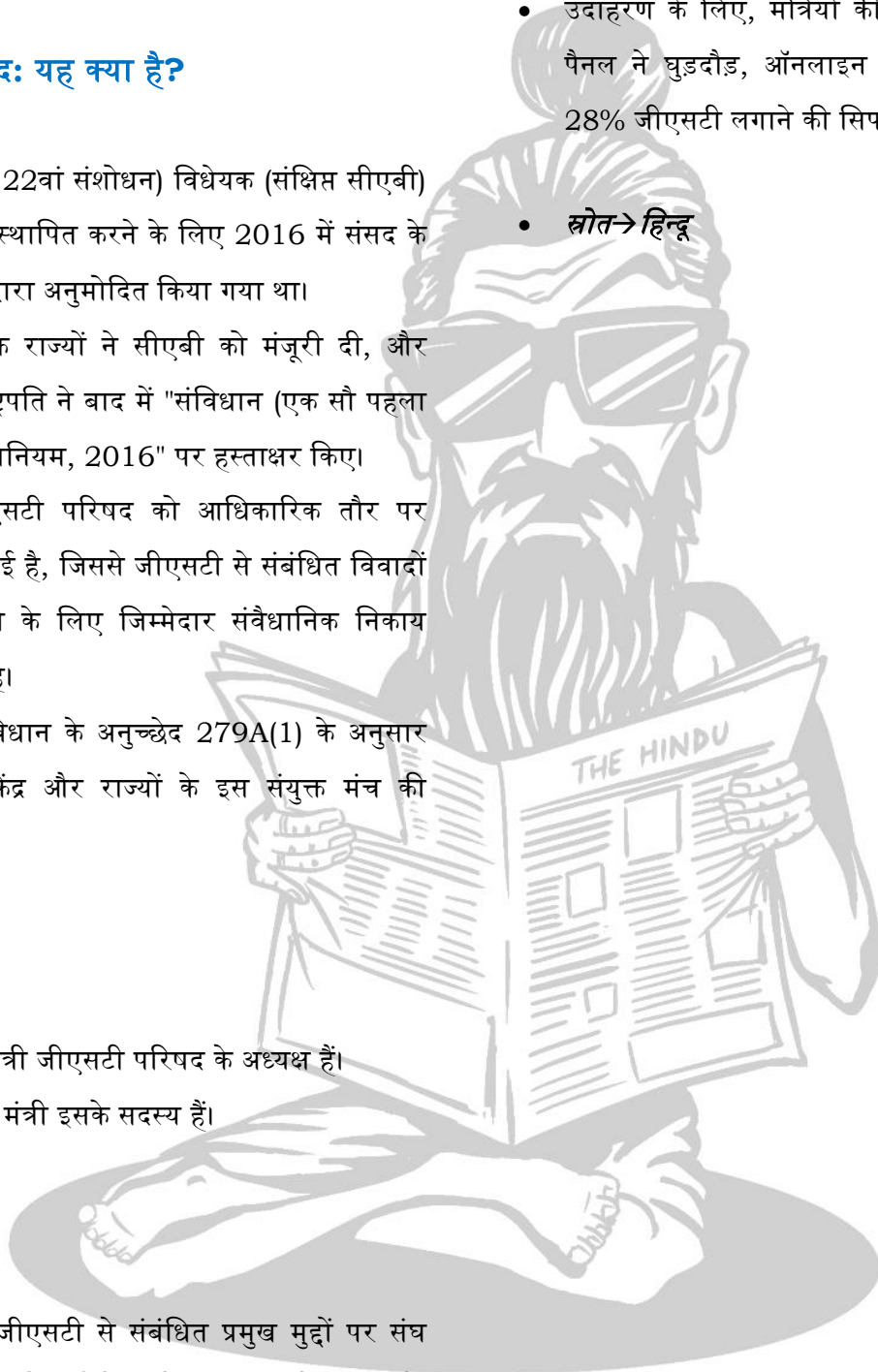
कार्य:

- परिषद को "जीएसटी से संबंधित प्रमुख मुद्दों पर संघ और राज्यों को सिफारिशें करने का काम सौंपा गया है, जैसे कि वस्तुओं और सेवाओं को जीएसटी, मॉडल जीएसटी कानूनों के अधीन या बाहर रखा जा सकता

है," जैसा कि संविधान के अनुच्छेद 279 में कहा गया है।

- यह विभिन्न जीएसटी दर स्लैब भी निर्धारित करता है।
- उदाहरण के लिए, मंत्रियों की अंतरिम रिपोर्ट के एक पैनल ने घुड़दौड़, ऑनलाइन गेमिंग और कैसीनो पर 28% जीएसटी लगाने की सिफारिश की।

- स्रोत → हिन्दू



संपादकीय विश्लेषण

एकीकृत रणनीति:

1. प्रधानमंत्री गति शक्ति योजना:

लक्ष्य:

- यह सुनिश्चित करने के लिए कि आधारभूत कार्य में तेजी लाने, लागत में कटौती और रोजगार पैदा करने पर ध्यान देने के साथ, अगले चार वर्षों के दौरान बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई है और उन्हें पूरा किया गया है।
- नेशनल इन्फ्रास्ट्रक्चर पाइपलाइन, जिसे 2019 में बनाया गया था और जिसकी लागत 110 लाख करोड़ रुपये थी, का भुगतान गति शक्ति योजना द्वारा किया जाएगा।
- कार्यक्रम का उद्देश्य बंदरगाहों पर टर्नअराउंड समय को कम करना और व्यापार को बढ़ावा देने के लिए रसद खर्च को कम करने के अलावा कार्गो हैंडलिंग क्षमता में वृद्धि करना है।
- इसकी दो अतिरिक्त रक्षा कॉरिडोर बनाने की भी योजना है, एक तमिलनाडु में और दूसरा उत्तर प्रदेश में, साथ ही 11 औद्योगिक कॉरिडोर। एक और लक्ष्य सभी कस्बों को 4जी सुलभ बनाना है। गैस पाइपलाइनों का नेटवर्क 17,000 किमी लंबा हो जाएगा।
- 200 से अधिक नए हवाई अड्डों, हेलीपोर्ट्स और वाटर एयरोड्रोम के विस्तार के साथ-साथ राष्ट्रीय राजमार्ग नेटवर्क की लंबाई को दोगुना करके 2 लाख किलोमीटर करने से सरकार को 2024-2025 के लिए निर्धारित चुनौतीपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

- बुनियादी ढांचे में रुचि रखने वाले 16 मंत्रालयों का समन्वय करने का इरादा है।
- बेतरतीब योजना, मानकीकरण की कमी, मंजूरी प्राप्त करने में कठिनाइयों और समय पर विकास और बुनियादी ढांचे की क्षमताओं के उपयोग सहित कई स्थायी समस्याओं को इसकी मदद से हल किया जा सकता है।
- प्लेटफार्म डिजिटल गति शक्ति:** इसमें एक समान मंच विकसित करना शामिल है जो बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की योजना और निष्पादन के दौरान विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के बीच कुशल वास्तविक समय समन्वय को सक्षम करेगा।

अपेक्षित परिणाम:

- विधि चल रहे और आसन्न कनेक्शन संचालन दोनों के मानचित्रण में सहायता करेगी।
- लास्ट माइल कनेक्टिविटी के संदर्भ में, देश के विभिन्न क्षेत्रों और औद्योगिक समूहों के बीच संबंध भी काफी स्पष्ट होंगे।
- परिवहन कनेक्शन के लिए एक व्यापक और समन्वित रणनीति मेक इन इंडिया को बहुत आगे बढ़ाएगी और परिवहन के विभिन्न विकल्पों को शामिल करेगी।
- यह भारत को वैश्विक वाणिज्यिक केंद्र बनने में सहायता करेगा।
- एक एकीकृत बुनियादी ढांचे का निर्माण करना महत्वपूर्ण है।

- विभागों की सोच और सिलोस में कार्य करने के कारण समन्वय और परिष्कृत सूचना के आदान-प्रदान की कमी के कारण, मैक्रो प्लानिंग और माइक्रो कार्यान्वयन के बीच एक व्यापक अंतर है।
- एक अध्ययन में पाया गया कि भारत ने अन्य समृद्ध देशों की तुलना में लॉजिस्टिक्स पर अधिक खर्च किया, जो सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 13 प्रतिशत है।
- इन उच्च लॉजिस्टिक्स खर्चों के परिणामस्वरूप भारत का निर्यात काफी कम प्रतिस्पर्धी है।
- यह सर्वविदित है कि आर्थिक गतिविधियों और पर्याप्त रोजगार को बढ़ावा देने के लिए प्रथम श्रेणी के बुनियादी ढांचे का निर्माण एक आजमाया हुआ और सही तरीका है।
- राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन के अतिरिक्त भी एक लक्ष्य है।
- मुद्रीकरण के लिए एक स्पष्ट ढांचा तैयार करने और संभावित निवेशकों को निवेश में उनकी रुचि को प्रोत्साहित करने के लिए परिसंपत्तियों की एक तैयार सूची प्रदान करने के लिए, एनएमपी को सार्वजनिक किया गया है।

- मांग में कमी कोविड-19 के बाद की दुनिया में निवेशकों की मांग और निजी मांग दोनों में कमी है।
- संरचनात्मक मुद्दे जब अन्य देशों की तुलना में, भूमि अधिग्रहण और मुकदमेबाजी की समस्याओं के कारण परियोजना कार्यान्वयन की गति असाधारण रूप से धीमी है।
- भूमि की पहुंच और पर्यावरण संबंधी मंजूरी के मामले में बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए लाइसेंस प्राप्त करना काफी चुनौतीपूर्ण है। इसके अलावा, लगातार कानूनी मुद्दे प्रतीक्षा को लंबा करते हैं।
- पीएम गति शक्ति एक सकारात्मक विकास है।
- हालांकि, इसे सार्वजनिक खर्च में वृद्धि के कारण व्यापक आर्थिक स्थिरता और संरचनात्मक स्थिरता के मुद्दों को भी संबोधित करना चाहिए।
- इस प्रयास में सहायता के लिए एक ठोस और भरोसेमंद संस्थागत और नियामक ढांचा आवश्यक है।

आगे के मुद्दे:

- सरकार के "मजबूत" बैंकिंग क्षेत्र के सुधारों और लगभग रु. इन्सॉल्वेंसी एंड बैंकरप्सी कोड द्वारा खराब ऋण वसूली में 2.4 लाख करोड़, घटते क्रेडिट उठाव के रुझान के बारे में चिंताएं हैं।
- भविष्य के मुनाफे की गारंटी और बाजार का प्रदर्शन करके आगामी पहल के लिए पूंजी प्राप्त करने में सहायता करने के लिए बैंक व्यवसायों को ऋण प्रदान करते हैं।

2. पड़ोस की पहली नीति:

- एक शांतिपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण पड़ोस आवश्यक है क्योंकि एक राष्ट्र का पड़ोस उसके भाग्य का निर्धारण करता है। भारत की "पड़ोस पहले नीति," या विदेश नीति, सक्रिय रूप से अपने करीबी पड़ोसियों के साथ संबंधों को बढ़ावा देने को प्राथमिकता देती है।
- नियम का महत्व जैसा कि पूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने एक बार कहा था, "आप अपने दोस्तों को बदल सकते हैं, लेकिन अपने पड़ोसियों को नहीं।" यदि भारत को उभरती हुई बहुध्रुवीय अंतर्राष्ट्रीय राजनीति पर पर्याप्त प्रभाव डालना है, तो उसे अपनी घरेलू आकांक्षाओं और अपनी विदेश नीति के उद्देश्यों के बीच मजबूत संबंध स्थापित करने होंगे।
- एक सुरक्षित, शांतिपूर्ण और स्थिर पड़ोस भारत के राजनीतिक और सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

क्षेत्रों और राजनयिक समस्याओं के बीच संबंध:

- **विभाजित उपमहाद्वीप:** भारत के विभाजन से उत्पन्न समस्याओं के परिणामस्वरूप, उपमहाद्वीप अब राजनीतिक और धार्मिक आधार पर विभाजित हो गया है।
- **क्षेत्रीय कूटनीति:** सीमाओं को परिभाषित करने, नदी के प्रवाह को साझा करने, अल्पसंख्यकों के अधिकारों को संरक्षित करने और लोगों और उत्पादों की आवाजाही की अनुमति देने की चुनौतियों से भी प्रभावित है।
- **चीन का उदय:** 1950-1951 में जब चीन ने तिब्बत पर कब्जा कर लिया, तो उसने आधिकारिक तौर पर भारत-तिब्बत सीमा पार कर ली। इससे भारत का भू-राजनीतिक वातावरण काफी प्रभावित होता है।

- भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय क्षेत्रीय विवाद से परे, अपनी सीमाओं के भीतर एक शक्तिशाली राज्य के उदय का उसके पड़ोसियों के साथ भारत के संबंधों पर प्रभाव पड़ा।
- **घरेलू राजनीति:** भारत की घरेलू राजनीति का हमारी क्षेत्रीय रणनीति पर हमेशा प्रभाव पड़ा है। यह हमारे पड़ोसियों के लिए भी सच है, जिनकी राष्ट्रीय राजनीति भारत के साथ उनके व्यवहार को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, तमिल प्रश्न ने काफी हद तक श्रीलंका पर भारत के दृष्टिकोण को आकार दिया है।
- **पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ने तीस्ता जल पर भारत और बांग्लादेश के बीच समझौते को रद्द कर दिया।**
- **कनेक्टिविटी का अभाव:** आज हम अपने आप को कनेक्टिविटी की खेदजनक स्थिति में पाते हैं जो भू-रणनीतिक विखंडन, राजनीतिक राष्ट्रवाद और आर्थिक संरक्षणवाद के वर्षों का उत्पाद है।
- **भविष्योन्मुखी नीति अहस्तक्षेप:** हमारे पड़ोसी हमें और हमारी नीतियों को कैसे देखते हैं, इसमें भारत का आकार एक बड़ी भूमिका निभाता है। दक्षिण एशिया के भूमि क्षेत्र, जनसंख्या, आर्थिक गतिविधि और संसाधन आधार पर भारत का प्रभुत्व है।
- इसलिए भारत और उसके अन्य पड़ोसियों को घरेलू मुद्दों में हस्तक्षेप न करने की नीति को बनाए रखना चाहिए और इस बात से अवगत होना चाहिए कि एक बड़े पड़ोसी के साथ व्यवहार करना उनके छोटे पड़ोसियों के लिए कितना अजीब हो सकता है।
- **भारत की बाहरी सीमाओं पर एक सीमा आयोग की स्थापना** अभी भी परिभाषित करने की आवश्यकता है, और सीमा विवादों को हल करने से सफल क्षेत्रीय एकीकरण का मार्ग प्रशस्त होगा। इसलिए, सीमा मुद्दे को ठीक करने के लिए, भारत को एक सीमा आयोग स्थापित करने के लिए काम करना चाहिए।

- **विदेश नीति के लक्ष्यों पर व्यापक परिप्रेक्ष्य:** इस क्षेत्र में भारत की विदेश और आर्थिक नीतियों को मिलाना अभी भी चुनौतीपूर्ण है। परिणामस्वरूप भारत को अल्पकालिक आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए अपने पड़ोसियों के साथ अपने द्विपक्षीय संबंधों को जोखिम में डालने से बचना चाहिए।
- **क्षेत्रीय समन्वय को सुदृढ़ बनाना क्षेत्रीय संपर्कदुनिया में** कहीं और पहले से उपयोग में आने वाले व्यावहारिक, भरोसेमंद और लागत प्रभावी प्रौद्योगिकी समाधानों का उपयोग करते हुए सुरक्षा मुद्दों को संबोधित करते हुए अधिक सक्रिय रूप से बढ़ावा देने की आवश्यकता है।
- **गुजराल के सिद्धांत को लागू करना:** भारत को गुजराल सिद्धांत को अपनी विदेश नीति की आधारशिला के रूप में अपनाना चाहिए। यह सुनिश्चित करेगा कि भारत का कद और प्रभाव, साथ ही साथ क्षेत्रीय समृद्धि, अपने पड़ोसियों के साथ बातचीत की गुणवत्ता से अटूट रूप से जुड़ी हुई है।

निष्कर्ष:

- जटिल मुद्दों और परिस्थितियों के बावजूद, पड़ोस की पहली रणनीति को सभी राजनीतिक और पारस्परिक स्तरों पर चल रहे जुड़ाव पर आधारित होना चाहिए, जो कि अपने पड़ोसियों के साथ भारत की साझेदारी के लिए अद्वितीय गहरी सांस्कृतिक समानता पर आधारित हो।

